MAEC - 01

आर्थिक सिद्धान्त

प्रथम खण्ड उपभोक्ता व्यवहार सिद्धान्त

इकाई –01 विषय परिचय

1. व्यक्तिगत एवं समष्टिगत विश्लेषण
2. वास्तविक तथा आदर्श मूलक विश्लेषण
3. पुस्तक की रूपरेखा एवं योजना
4. पाठ्य सामग्री की प्रमुख विशेषताएं

इकाई –02 मांग का नियम

1. उपयोगिता की अवधारणा एवं मांग
2. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम
3. सीमान्त उपयोगिता वक्र से मांग वक्र की व्युत्पत्ति
4. मांग का नियम
5. मांग में परिवर्तन एवं मांगी गई मात्रा में परिवर्तन
6. मांग को प्रभावित करने वाले तत्व
7. मांग के सिद्धान्त की व्याख्या – तटस्थता वक्र विधि
8. तटस्थता वक्र से मांग वक्र की व्युत्पत्ति
9. मांग के प्रकार
10. मांग के नियम के सामान्य अपवाद

इकाई –03 मांग की लोच

1. मांग की लोच का अर्थ एवं परिभाषा
2. मांग की लोच की श्रेणियां
3. मांग की लोच की माप
4. मांग की लोच के निर्धारक तत्व
5. मांग की लोच की अन्य मापें
6. मांग की लोच का महत्व

इकाई –04 मांग आंकलन एवं पूर्वानुमान

1. मांग पूर्वानुमान के तत्व
2. मांग पूर्वानुमान के उद्देश्य
3. मांग पुर्वानुमान की विधियॉ
4. आदर्श पूर्वानुमान विधि के आवश्यक गुण
5. मांग पूर्वानुमान का महत्व

इकाई –05 निश्चितता तथा अनिश्चितता की दशाओं में उपभोक्ता व्यवहार स्थाई तथा गैर स्थायी वस्तुओं की मॉग

1. निश्चितता की दशाओं में उपभोक्ता व्यवहार विश्लेषण
2. अनिश्चितता की दशाओं में उपभोक्ता व्यवहार विश्लेषण
3. वस्तुओं की सन्तुलन मॉग

इकाई –06 उपभोग फलन तथा अन्तर कालगत चयन

1. समय क्षितिज की अवधारणा
2. समय क्षितिज के आधार पर उपभोक्ता विश्लेषण

द्वितीय खण्ड – उत्पादन

इकाई –07 फर्म के उद्देश्य लाभ अधिकतमकरण, विक्रय अधिकतमकरण

1. फर्म
2. फर्म की विशेषताएं
3. फर्म के उद्देश्य

इकाई –08 अल्पकाल एवं दीर्घकाल में फर्म के उद्देश्य

1. अल्पकाल एवं दीर्घकाल का अर्थ
2. अल्पकाल में फर्म के उद्देश्य
3. अल्पकाल में क्या फर्म हानि उठाकर भी उत्पादन जारी रख सकती है।

4. दीर्घकाल में फर्म का उद्देश्य

इकाई –09 अल्पकाल में उत्पादन फलन–परिवर्तनशील अनुपात का नियम

1. उत्पादन फलन का अर्थ
2. एक परिवर्ती आदा सहित उत्पादन फलन
3. दो परिवर्ती आदाओं सहित उत्पादन फलन

इकाई –10 दीर्घकाल में उत्पादन फलन पैमाने के प्रतिफल

1. पैमाने के प्रतिफल सभी परिवर्ती आदाएं
2. एक ही उत्पादन फलन में पैमाने के बदलते हुए प्रतिफल
3. न्यूनतम लागत संयोग का निर्धारण

इकाई –11 लागत रेखाएं और उनका परिमाणांकन

1. लागत की धारणा
2. अल्पकालीन लागत विश्लेषण
3. दीर्घकालीन लागत विश्लेषण

इकाई –12 पैमाने की मितव्ययताएं

1. बड़े पैमाने पर उत्पादन एवं मितव्ययताएं
2. आन्तरिक मितव्ययताएं
3. बाह्य मितव्ययताएं
4. आन्तरिक तथा बाह्य मितव्ययताओं में सम्बन्ध
5. पैमाने की अमितव्ययताएं

खण्ड तीन कीमत निर्धारण

इकाई –13 पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत एवं उत्पादन निर्धारण

1. बाजार की विभिन्न श्रेणियॉ
2. कीमत निर्धारण की प्रक्रिया
3. पूर्ण प्रतियोगिता का अर्थ एवं विशेषताएं
4. प्रतियोगी बाजार में कीमत निर्धारण का सामान्य माडल
5. अल्पकाल में कीमत निर्धारण एवं फर्म का साम्य
6. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत दीर्घकालीन कीमत निर्धारण

इकाई –14 एकाधिकार के अन्तर्गत कीमत एवं उत्पादन निर्धारण

1. एकाधिकार का अर्थ, उदय एवं विशेषताएं
2. एकाधिकार बाजार में मांग व पूर्ति वक्र
3. एकाधिकार के अन्तर्गत कीमत निर्धारण
4. दीर्घकाल में एकाधिकारी फर्म की स्थिति
5. एकाधिकार का आर्थिक कल्याण पर प्रभाव
6. सरकार द्वारा एकाधिकारिक फर्म पर नियंत्रण

इकाई –15 विभेदकारी एकाधिकार के अंतर्गत कीमत एवं उत्पादन का निर्धारण

1. विभेदकारी एकाधिकार, विभेदकारी एकाधिकारी एवं कीमत विभेदीकरण की धारणा
2. कीमत विभेदीकरण के विभिन्न स्वरूप
3. कीमत विभेदीकरण के प्रकार
4. कीमत विभेदीकरण के संभव होने एवं लाभकारी होने की शर्तें
5. विभेदीकरण एकाधिकार के अंतर्गत कीमत एवं उत्पादन का निर्धारण
6. कीमत विभेदीकरण का औचित्य

इकाई –16 एकाधिकार प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत एवं उत्पादन निर्धारण

1. एकाधिकारिक प्रतियोगिता का अर्थ
2. एकाधिकारिक प्रतियोगिता की विशेषताएं
3. एकाधिकारी प्रतियोगिता तथा दो मांग वक्रों की अवधारणा
4. अल्पकाल में एकाधिकारिक प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म का साम्य
5. फर्म का दीर्घकालीन संतुलन
6. समूह साम्य की अवधारणा
7. एकाधिकारिक प्रतियोगिता एवं आर्थिक कल्याण
8. अपूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकारिक प्रतियोगिता में अन्तर

इकाई –17 गैर सन्धिपूर्ण अल्पाधिकार के विभिन्न स्वरूप

1. अल्पाधिकार का अर्थ
2. अल्पाधिकार के विभिन्न स्वरूपों के निर्धारक तत्व
3. अल्पाधिकार का कुरनों स्वरूप
4. अल्पाधिकार का बरतरां स्वरूप
5. अल्पाधिकार का चेम्बरलिन स्वरूप
6. कुरनो, बरतरां तथा चेम्बरलिन स्वरूप
7. अल्पधिकार का स्टेकलवर्ग स्वरूप
8. किंकी मांग वक्र स्वरूप

इकाई –18 सन्धिपूर्ण अल्पाधिकार के विभिन्न स्वरूप

1. सन्धिपूर्ण अल्पाधिकार का अर्थ
2. सन्धिपूर्ण अल्पाधिकार के विभिन्न स्वरूपों के निर्धारक तत्व
3. पूर्ण सन्धि तथा अपूर्ण सन्धि में भेद
4. कार्टेल (पूर्ण सन्धि)
5. मूल्य मार्गदर्शन (अपूर्ण सन्धि)

इकाई –19 द्विपक्षीय एकाधिकार

1. द्विपक्षीय एकाधिकार का अर्थ
2. विक्रेता एकाधिकार विश्लेषण
3. क्रेता एकाधिकार विश्लेषण
4. द्विपक्षीय एकाधिकार विश्लेषण
5. द्विपक्षी एकाधिकार विश्लेषण
6. अनधिमान वक्रो द्वारा द्विपक्षी एकाधिकार विश्लेषण
7. द्विपक्षी एकाधिकार : यदि एक ही फर्म क्रेता और विक्रेता दोनो ही

इकाई –20 एकाधिकार तथा केन्द्रीयकरण का अंश

1. एकाधिकार अंश के निर्धारक तत्व
2. फर्मों की संख्या
3. नियंत्रण का केन्द्रीयकरण
4. लाभ दर
5. मूल्य तथा सीमान्त लागत में अन्तर
6. फर्म तथा उद्योग के मांग वक्रों के ढलानों का अनुपात
7. प्रतिलोच मांग
8. अन्य माप

इकाई –21 फर्म की वृद्धि एवं विलय

1. फर्म की वृद्धि की धारणा
2. फर्म की वृद्धि के सिद्धान्त
3. पेनरोज सिद्धान्त
4. वृद्धि की विधियॉ

इकाई –22 क्षमता उपयोग की धारणा

1. क्षमता उपयोग और लागतें
2. क्षमता उपयोग और बाजार के प्रकार
3. पूॅजी उपयोग का सिद्धान्त
4. अतिरिक्त क्षमता पुनरावलोकन

इकाई –23 मूल्य विभेदीकरण एवं मार्क अप मूल्य निर्धारण

1. मूल्य विभेद का अर्थ
2. मूल्य विभेद की दशाएं
3. मूल्य विभेद की श्रेणियॉ
4. मूल्य विभेदक फर्म का सन्तुलन
5. अन्य सन्तुलन परिस्थितियां
6. मूल्य, मांग लोच, सीमान्त आय तथा विभेदी मूल्य
7. मार्क अप मूल्य निर्धारण प्रवेश
8. मार्क अप का अर्थ
9. मार्क अप मूल्य निर्धारण तथा आधुनिक लागत सिद्धान्त

10. मार्क अप मूल्य निर्धारण की व्यवहारिकता
11. मार्क अप तथा मूल्य विभेदक फर्म

इकाई –24 सीमान्त लागत मूल्य निर्धारण

1. सीमान्त लागत मूल्य निर्धारण का अर्थ
2. सीमान्त लागत मूल्य निर्धारण नियम का औचित्य
3. सीमान्त लागत मूल्य निर्धारण नियम की व्यवहारिक कठिनाइया।

खण्ड चार साधन कीमत निर्धारण

इकाई –25 सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत

1. साधन कीमत निर्धारण – प्रारम्भिक स्पष्टीकरण एवं मान्यताएं
2. सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त
3. प्रतियोगी बाजार में साधन कीमत निर्धारण
4. यूलर प्रमेय तथा योगीकरण की समस्या अथवा उत्पाद निःशेषण प्रमेय

इकाई –26 सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त – अपूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत

1. साधन कीमत निर्धारण अपूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत सीमान्त उत्पादकता।
2. उत्पादन बाजार में एकाधिकार की स्थिति में साधन कीमत निर्धारण
3. क्रेता एकाधिकार के अन्तर्गत साधन कीमत निर्धारण जब निर्धारण जब फर्म उत्पादन बाजार में विक्रेता एकाधिकारी भी हो और साधन बाजार के क्रेता एकाधिकारी हो।
4. द्विपक्षी एकाधिकार में साधन कीमत निर्धारण

इकाई –27 लागत के सिद्धान्त –। रिकार्डो का सिद्धान्त

1. लगान का अर्थ
2. लगान के प्रकार
3. लगान के सिद्धान्त (लगान का निर्धारण)
4. रिकार्डो का लगान सिद्धान्त
5. रिकार्डो के सिद्धान्त के मुख्य तत्व
6. रिकार्डो के सिद्धान्त की आलोचना

इकाई –28 लगान के सिद्धान्त –।। : आधुनिक सिद्धान्त

1. आधुनिक सिद्धान्त का आधार
2. आधुनिक सिद्धान्त के अनुसार लगान का अर्थ
3. आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या
4. लगान की उत्पत्ति
5. आधुनिक सिद्धान्ता के मुख्य तत्व
6. रिकार्डो के सिद्धान्त से तुलना
7. लगान तथा मूल्य
8. आभास लगान की धारणा
9. योग्यता का लगान

इकाई –29 ब्याज के सिद्धान्त । : कीन्स पूर्व

1. ब्याज
2. ब्याज के सिद्धान्त

इकाई –30 ब्याज के सिद्धान्त : कीन्स का सिद्धान्त

1. सिद्धान्त का प्रतिपादन
2. सिद्धान्त से सम्बन्धित अन्य बिन्दु
3. सिद्धान्त की आलोचना

इकाई –31 मजदूरी सिद्धान्त

1. मजदूरी निर्धारण के सिद्धान्त : परम्परागत अर्थशास्त्रीय विचारधाराएं
2. मजदूरी निर्धारण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त
3. मजदूरी निर्धारण की आधुनिक व्याख्या
4. पूर्ण प्रतियोगिता दशाओं में मजदूरी निर्धारण
5. क्रय एकाधिकार अवस्था में मजदूरी निर्धारण
6. श्रम संघ, सामूहिक सौदेबाजी तथा मजदूरी निर्धारण

इकाई –32 लाभ के सिद्धान्त

1. लाभ के प्रकार

2. लाभ के सिद्धान्त

खण्ड पॉच कल्याणकारी अर्थशास्त्र

इकाई –33 सामान्य साम्य की अवधारणा उपभोक्ता का साम्य

1. सामान्य साम्य का अर्थ
2. सामान्य साम्य की अवधारणा का विकास
3. सामान्य साम्य में निहित मान्यताएं
4. उपभोक्ता की साम्य स्थिति
5. विनिमय की साम्य स्थिति

इकाई –34 सामान्य साम्य की अवधारणा : उत्पादकों का साम्य

1. उत्पादन में सामान्य साम्य का अर्थ
2. उत्पादक की साम्य स्थिति
3. उत्पादक संभावना वक्र का निरूपण
4. वस्तुओं व साधनों की कीमत

इकाई –35 कल्याण अर्थशास्त्र

1. कल्याण अर्थशास्त्र का अर्थ
2. व्यक्तिगत कल्याण एवं सामाजिक कल्याण
3. अन्तः व्यक्ति उपयोगिताओं की तुलना एवं कल्याण अर्थशास्त्र
4. कल्याण अर्थशास्त्र की मान्यताएं व शर्तें
5. व्यक्तिगत कल्याण एवं सार्वजनिक निर्णय प्रक्रिया
6. कल्याण अर्थशास्त्र की सीमाएं

इकाई –36 अधिकतम कल्याण हेतु परेटो की इष्टतम शर्तें

1. संख्या सूचक व क्रम सूचक उपयोगिता, उपयोगिताओं की अन्तः व्यक्ति तुलना एवं सामाजिक आर्थिक कल्याण
2. विल्फ्रेडो परेटो एवं कल्याण अर्थशास्त्र
3. परेटो श्रेष्ठता, परेटो इष्टतमता तथा सहमति सिद्धान्त
4. परेटो की इष्टतम शर्तें
5. उत्पादन संभाव्यता वक्र एवं इष्टतम विनिमय स्थिति
6. इष्टतम विनिमय तथा उपयोगिता संभावना वक्र
7. परेटो इष्टतम शर्तें एवं पूर्ण प्रतियोगिता
8. क्या परेटोकी इष्टतम शर्तें पूरी हो सकती हैं?
9. द्वितीय श्रेष्ठ प्रमेय

इकाई –37 नव कल्याण अर्थशास्त्र

1. नव कल्याण अर्थशास्त्र का अर्थ
2. पींगू के आदर्श उत्पादन की विलियम बॉमोल द्वारा विवेचना
3. परम्परागत कल्याण अर्थशास्त्र की अव्यावहारिकता
4. वैयक्तिक कल्याण तथा सार्वजनिक निर्णय प्रक्रिया

इकाई –38 क्षतिपूर्ति सिद्धान्त

1. क्षतिपूर्ति का अर्थ एवं आवश्यकता
2. क्षतिपूर्ति मापदण्ड
3. क्षतिपूर्ति सिद्धान्तों की आलोचना
4. आय में समानता की समस्या तथा राल्स का ''न्याय का सिद्धान्त''

MAEC - 02

सार्वजनिक अर्थशास्त्र

प्रथम खण्ड प्रारम्भिक

इकाई –01 विभिन्न राजकोषीय प्रणालियों में राज्य की आर्थिक क्रियाओं का विश्लेषण

1. राज्य की आर्थिक क्रियाओं में वृद्धि के कारण
2. विभिन्न आर्थिक प्रणालियों में राज्य की आर्थिक भूमिका

इकाई –02 लोक अर्थशास्त्र के उद्‌देश्य व अंग

1. लोक वित्त के उद्‌देश्य
2. बजट नीति के तीन मुख्य अंग
3. बजट उसकी संरचना व अवधारणाएं
4. राजकीय आय के स्त्रोत
5. वित्तीय प्रवाह व वास्तविक अर्थव्यवस्था के बीच सम्बन्ध

इकाई –03 सामाजिक वस्तुओं का सिद्धान्त

1. वस्तुओं का वर्गीकरण तथा विशेषताएं
2. वस्तुओं का मूल्य निर्धारण
3. कुशल साधन आवंटन के सामान्य संतुलन मॉडल
4. विशुद्ध सामाजिक वस्तुओं का सामान्य मॉडल

इकाई –04 बाह्‌यताएं एवं मिश्रित वस्तुएं

1. बाह्‌यताएं एवं मिश्रित वस्तुएं
2. गुणाधारित वस्तुएं कुशल मूल्य निर्धारण
3. अवगुणाधारित वस्तुएं कुशल मूल्य निर्धारण
4. छोटे वर्ग में सौदा करना
5. सामाजिक कल्याण फलन
6. कुशलता एवम् उत्तमता

इकाई –05 लोक चयन

1. विक्सेल की सामाजिक अधिमान प्रकटीकरण की अवधारणा
2. प्रजातांत्रिक मत की राजनीतिक अंतःक्रिया लागतें
3. बहुमत द्वारा सामाजिक सम्बन्ध व्यक्त करना
4. अनिश्चितता की स्थिति में सामाजिक अधिमानों की अभिव्यक्ति
5. अनिश्चितता की दशाओं में सूचनात्मक लागत एवं राजनीतिक परिणाम
6. लोक चयन के अन्य उपागम
7. राजनैतिक संविधान तथा वित्तीय नियम

द्वितीय खण्ड सार्वजनिक व्यय एवं सार्वजनिक उपकम

इकाई –06 सार्वजनिक व्यय

1. सार्वजनिक व्यय में वृद्धि एवं विस्तार
2. सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के कारण
3. वैगनर का बढ़ती हुई राज्य की क्रियाओं का निमय
4. वाइजमेन एवं पीकाक की परिकल्पना

इकाई –07 सार्वजनिक व्यय मूल्यांकन एवं बजटीय रूप

1. सार्वजनिक व्यय मूल्यांकन की कसौटी
2. सामाजिक लाभ लागत विश्लेषण
3. प्रायोजना के मूल्यांकन का सिद्धान्त

4. बट्टा दर का चुनाव
5. प्रोग्राम बजटिंग
6. शून्य आधारित बजट पद्धति

इकाई –08 सार्वजनिक उपक्रम : मिश्रित अर्थव्यवस्था के विकास एवं स्वरूप में भूमिका, चुनाव कसौटियॉ

1. सार्वजनिक उपक्रम का अर्थ
2. मिश्रित अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक उपक्रमों की भूमिका
3. भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का विकास व स्वरूप

इकाई –09 भारत में सार्वजनिक उपक्रमों मे ंकीमत नीति, प्रबन्धित कीमतें एवं आधिक्य सृजन, सैद्धान्तिक पहलू और कल्याणकारी प्रभाव

1. सार्वजनिक उपक्रमों में कीमत नीति
2. सार्वजनिक उपक्रमों के कीमत सिद्धान्त
3. प्रबन्धित कीमतें
4. आधिक्य सृजन
5. सैद्धान्तिक पहलू
6. कल्याणकारी प्रभाव

तृतीय खण्ड करारोपण

इकाई –10 करारोपण के सिद्धान्त एवं वर्गीकरण

1. करारोपण के सिद्धान्त
2. एडम स्मिथ के करारोपण सिद्धान्त
3. करारोपण के अन्य सिद्धान्त
4. अच्छी कर प्रणाली की विशेषता
5. करों का वर्गीकरण
6. प्रत्यक्ष एवं परोक्ष कर
7. आनुपाती, प्रगतिशील प्रतिगामी एवं अधोगामी कर
8. विशिष्ट कर एवं मूल्यानुसार कर
9. एकल एवं बहुकर प्रणाली
10. वस्तुओं एवं सेवाओं पर कर

इकाई –11 करारोपण में न्याय

1. करारोपण में न्याय के सिद्धान्त
2. वित्तीय सिद्धान्त
3. लाभ का सिद्धान्त
4. करदान योग्यता का सिद्धान्त

इकाई –12 आवंटन कुशलता

1. आवंटन कुशलता
2. पैरेटो उत्तमावस्था अथवा कुशलता
3. साधन आवंटन पर प्रभाव
4. उपभोक्ता के अतिरेक पर प्रभाव
5. प्रत्यक्ष कर

इकाई –13 करापात एवं कर विवर्तन

1. प्रस्तावना
2. करापात में सन्तुलन
3. करापात में सन्तुलन
4. करापात के वैकल्पिक तथ्य

5. करापात एवं कर विवर्तन के सिद्धान्त
6. करापात एवं कर विवर्तन के तत्व

इकाई –14 राजकोषीय आपात

1. राजकोषीय आपात के प्रकार
2. राजकोषीय नीति के विभिन्न आपात
3. कर भार का स्वरूप
4. राजकोषीय आपात की विभिन्न समस्याएं
5. राजकोषीय आपात के विभिन्न रूप

चतुर्थ खण्ड भारतीय कर प्रणाली

इकाई –15 भारतीय सार्वजनिक वित्त–I : भारतीय कर प्रणाली

1. भारत में कराधान की भूमिका
2. भारतीय कर प्रणाली की प्रमुख विशेषताएं
3. भारतीय कर प्रणाली का ढॉचा

इकाई –16 भारतीय सार्वजनिक वित्त –II

1. प्रमुख कर
2. कराधान की प्रवृत्तियॉ
3. वर्तमान प्रवृत्तियॉ

इकाई –17 निजी आयकर – कर योग्य आय, कर आधार, कर मुक्त आय तथा अन्य कर छूटें

1. कर का आधार
2. आय का सैद्धान्तिक प्रत्यय
3. करदाता का निवास स्थान
4. कर प्रोत्साहन

इकाई –18 निजी आय कर : दर का ढांचा तथा वर्द्धमानता

1. निजी आयकर के ढांचे में परिवर्तन
2. निजी करों की वर्धमानता
3. निजी करों की नीची वर्धमानता के लिये जिम्मेदार घटक

इकाई –19 निगम आय कर –प्रमुख विशेषतायं तथा दर का ढांचा

1. कंपनी की परिभाषा तथा प्रकृति
2. निगमों पर कर क्यों लगाया जाना चाहिए?
3. निगमों पर किस प्रकार लगाया जाना चाहिए?
4. भारत में निगम कर
5. निगमों परलगने वाली करों की दरों में परिवर्तन
6. भारत में निगम कर की कुछ प्रमुख विशेषताएं
7. निगम करका सम्पूर्ण आय कर से प्राप्त आय में बढता महत्व

इकाई –20 निगम आय कर कम्पनी का वर्गीकरण मूल्य ह्रास सम्बन्धी नियम इत्यादि

1. कम्पनियों का वर्गीकरण
2. दायित्व की दृष्टि से कम्पनियों का विभाजन
3. सदस्य संख्या के आधार पर वर्गीकरण
4. प्राइवेट कम्पनी को पब्लिक कम्पनी के रूप में परिवर्तित करने की विधि
5. कम्पनियों के अन्य प्रकार
6. भारतीय आयकर अधिनियम, 1961 के अन्तर्गत कम्पनियों का वर्गीकरण
7. मूल्य ह्रास
8. मूल्य ह्रास का प्रावधान करने के तरीके

9. आय कर अधिनियम 1961 में मूल्य ह्रास सम्बन्धी प्रावधान

पंचम खण्ड सार्वजनिक ऋण एवं घाटा

इकाई –21 सार्वजनिक ऋण का अर्थशास्त्र

1. सार्वजनिक ऋण का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व
2. सार्वजनिक ऋण का वर्गीकरण
3. सार्वजनिक ऋण संमंधी अन्य मुद्दे
4. सार्वजनिक ऋण व आर्थिक विकास
5. सार्वजनिक ऋण एवं स्फीति

इकाई –22 सार्वजनिक ऋण संस्थापित सिद्धान्त, कियात्मक एवं क्षतिपूरक वित्त

1. संस्थापित सिद्धान्त
2. सार्वजनिक ऋण एवं कियात्मक क्षतिपूरक विता

इकाई –23 आन्तरिक व बाह्य सार्वजनिक ऋणों के मुद्दे

1. सार्वजनिक ऋण भार
2. सार्वजनिक ऋण भार व भावी संतति
3. सार्वजनिक ऋण व्यवस्था
4. सार्वजनिक ऋण शोधन पद्धतियॉ

इकाई –24 विकास के लिए राजकोषीय नीति : साधन गतिशीलता विकास, वितरण तथा मूल्यों पर प्रभाव

1. राजकोषीय नीति का अर्थ
2. राजकोषीय नीति का आधारभूत तर्क
3. राजकोषीय नीति के उद्देश्य
4. साधन गतिशीलता
5. राजकोषीय नीति तथा साधन गतिशीलता
6. विकास पर प्रभाव
7. वितरण पर प्रभाव
8. मूल्यों पर प्रभाव

इकाई –25 पंचवर्षीय योजनाओं का वित्त पोषण

1. वित्तीय तथा वस्तुगत संसाधनों का अंर्तसम्बन्ध
2. योजना वित्त पोषण तथा सार्वजनिक क्षेत्र
3. आयोजना व्यय तथा आयोजना भिन्न व्यय में अंतर
4. सरकार की वित्तीय प्राप्तियों तथा आयोजना व्यय का अंर्तसम्बन्ध
5. वित्तीय स्रोतों का विवरण
6. वित्तीय स्रोतों का प्रयोग

इकाई –26 भारत में बजटीय घाटे की नीति

1. लोक वित्त में बजटीय घाटे का अर्थ
2. भारत सरकार की देयताओं के स्रोत एवं रूप
3. बजटीय घाटे के प्रमापण का चयन
4. भारत में बजटीय घाटे के विभिन्न प्रमापण
5. भारत में बजटीय घाटे का स्तर

MAEC – 03

परिमाणात्मक विधियाँ

प्रथम खण्ड समुच्चय, सम्बन्ध व फलन

इकाई –01

1.2 समुच्चय का अर्थ एवं इसके संकेतन
1.3 समुच्चयों के परस्पर सम्बन्ध
1.4 समुच्चयों के संक्रियाएं व उनके नियम
1.5 सम्बन्ध व फलन
1.5.1 अमित युग्म व जोड़े
1.5.2 सम्बन्ध व कलन का अर्थ व इनमें अन्तर
1.5.3 फलनों की विभिन्न किस्में
1.6 दो या अधिक स्वतंत्र चरों के फलन

इकाई –02 आर्थिक सिद्धान्त में फलन तथा रेखाचित्र

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. मांग फलनपूर्ति फलन व संतुलन कीमत तथा संतुलन उत्पत्ति एवं वक्र
4. कुल आगम फलन, सीमान्त आगम फलन व औसत आगम फलन एवं वक्र
5. लागत फलन एवं वक्र : कुल लागत, सीमान्त लागत एवं औसत लागत
6. उत्पादन फलन एवं वक्र कुल उत्पत्ति, सीमान्त उत्पत्ति एवं औसत उत्पत्ति
7. उत्पादन सम्भावना वक्र एवं फलन
8. उपयोगिता फलन गणनावाचक रूप तथा क्रमवाचक रूप में तटस्थता वक्र व उनके फलनों की किस्में
9. राष्ट्रीय आय का निर्धारण उपयोग फलन, विनियोग सरकारी व्यय तथा संतुलन आय
10. सारांश
11. शब्दावली
12. विविध प्रश्न
13. प्रश्नों के उत्तर
14. कुछ उपयोगी पुस्तकें

इकाई –03 सीमान्त तथा निरंतरता

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. सीमान्त
4 .सीमान्त की मूलभूत धारणा का सरल परिचय
5. एक फलन की सीमा के उदाहरण
6. सीमा की परिभाषा : बांयी ओरकी सीमाव दायी ओर की सीमा का अर्थ
7. सीमा के प्रमेय के भ्रुण
8. निरंतरता का सांतत्व
9. अर्थ एवं इसकी तीन शर्तें
10. फलनों की निरंतरता के उदाहरण
11. अनिरंतरता या असांतत्व की स्थिति
12. निरंतरता अवकलनीयता व सीमा
13. सारांश

14. शब्दावली
15. विविध प्रश्न
16. प्रश्नों के उत्तर
17. कुछ उपयोगी पुस्तकें

इकाई –04 अवकलन एवं इसका निर्वचन

1. अवकलन का अर्थ
2. अवकलन के प्रमुख सूत्र
3. घातांक फलन का अवकलन
4. स्थिरांक का अवकलन
5. गुणन क्रिया में अवकलन
6. भागफल का अवकलन
7. फलन का फलन : श्रृंखला नियम
8. विलोम फलन
9. अस्पष्ट (अनिश्चित) फलन का अवकलन
10. उच्चतर अवकलन
11. सारांश
12. शब्दावली
13. अभ्यासों के उत्तर
14. कुछ उपयोयी पुस्तकें

इकाई –05 लघुगुणकीय अवकलन व लोच की माप

1. लघुगुणक अवकलन के सूत्र
2. लघुगुणक अवकलन के आर्थिक प्रयोग
3. मांग की लोच का लघुगणकीय अवकलन
4. सारांश
5. शब्दावली
6. अभ्यासों के उत्तर
7. कुछ उपयोगी पुस्तकें

इकाई –06 आंशिक अवकलन एवं इसका अर्थशास्त्र में प्रयोग

1. आंशिक अवकलनःअर्थ व उनकी संक्रियाएं
2. द्वितीय एवं उच्चतर क्रम के आंशिक अवकलन
3. विविध प्रश्न
4. प्रश्नों के उत्तर
5. आंशिक अवकलन तथा मांग विश्लेषण
7. आंशिक अवकलन तथा उत्पादन विश्लेषण
8. समरूप फलन
9. ओयलर का प्रमेय
10. आंशिक अवकलनों के प्रयोग के कुछ और सामान्य उदाहरण
11. साराश
12. शब्दावली
13. प्रश्नों के उत्तर
14. कुछ उपयोगी पुस्तके

इकाई –07 अवकलज के आर्थिक प्रयोग

1. कतिपय सूत्र
2. सीमान्त एवं औसत ज्ञान

3. अवकलनका चिन्ह एवं फलनकी प्रकृति
4. रेखाओं की प्रकृति
5. करारोपण व उत्पादन निर्धारण
6. सारांश
7. हल का उत्तर
8. शब्दावली
9. कुछ उपयोगी पुस्तकें

द्वितीय खण्ड

इकाई –08 इकाई अनुकूलतमीकरण की धारणा : अप्रतिबन्धित एवं प्रतिबन्धित
1. बर्द्धमान एवं ह्रासमान फलन
2. एक चर के फलनों में उच्चिष्ठ एवं निम्निष्ठ
3. दो या अधिक चर के फलनों में उच्चिष्ठ एवं निम्नष्ठ
4. विकल्प चरों के क्रान्तिक मूल्य ज्ञात करना
5. प्रतिबन्धित अनुकूलतमीकरण की द्वितीय कोटि की शर्तें

इकाई –09 अनुकूलतमीकरण की धारणा के अर्थशास्त्र में सरल प्रयोग
1. अर्थशास्त्र में प्रयोग

इकाई –10 समाकलन की अवधारणा एवं इसका अर्थशास्त्र में प्रयोग
1. समाकलन का अर्थ
2. समाकलन के नियम
3. निश्चित समाकलन
4. उत्पादन के क्षेत्र में समाकलन का प्रयोग
5. उपभोग बचत व विनियोग या पूंजी निर्माण
6. नकद प्रवाह का वर्तमान मूल्य
7. उपभोक्ता की बचत व उत्पादक की बचत

इकाई –11 आव्यूह (मैट्रिक्स) बीजगणित का परिचय
1. बुनियादी परिभाषाएं
2. मैट्रिक्सों पर संक्रियायें
3. मैट्रिक्स का पक्षान्तरण
4. मैट्रिक्स का प्रतिलोम
5. युगपत समीकरणों का हल
6. मैट्रिक्स (आव्यूह) पृथक्करण
7. मैट्रिक्स का अनुस्थित या कोटि

इकाई –12 सारणिक
1. सारणिक की कल्पना
2. सारणिक का मूल्यांकन
3. सारणिक के गुणधर्म
4. क्रैमर के नियम द्वारा युगपत समीकरणों का हल

इकाई –13 आगत निर्गत सारणी विश्लेषण का परिचय
1. आगत–निर्गत विश्लेषण
2. आगत निर्गत प्रतिरूप (मॉडल) की संरचना
3. खुला प्रतिरूप

इकाई –14 रैखिक प्रोग्रामिंग : आलेख विधि
1. रैखिक प्रोग्रामिंग की मुख्य विशेषताएं एवं समस्या का गणितीय रूप

तृतीय खण्ड

इकाई –15 ऑकड़ों के संकलन की विधियॉ

1. आंकड़ों का संकलन
2. आंकड़ों के संकलन की विधि
3. आंकड़ों का प्रदर्शन

इकाई –16 प्रतिचयन एवं प्रतिचयन की विधियॉ

1. सांख्यिकी अनुसंधान
2. पायिकता प्रतिचयन
3. गैर प्रायिकता प्रतिचयन
4. मिश्रित प्रतिचयन

इकाई –17 ऑकड़ों के प्रस्तुतिकरण की विधियॉ

1. प्रारम्भिक
2. चित्रमय निरूपण की सीमाएं
3. चित्र संरचना के सामान्य नियम
4. चित्रों के प्रकार

इकाई –18 केन्द्रीय प्रवृत्ति की मापें । : औसत

1. माध्यों के प्रकार
2. समान्तर माध्य
3. सामूहिक आंकड़ों का प्रयोग करके समान्तर माध्य
4. माध्य के गुण
5. प्रकृति एवं सार्थकता
6. स्वयं के अध्ययन के लिए प्रश्न

इकाई –19 केन्द्रीय प्रवृत्ति की मापें –।। : माध्यिका, चतुर्थक, दशमर्थक एवं शतमर्थक बहुलक

1. अवर्गीकृत आंकड़ों से माध्यिका की गणना
2. वर्गीकृत आंकड़ों से माध्यिका की गणना
3. माध्यिका के गुण
4. माध्यिका की प्रकृति एवं महत्व
5. चतुर्थक, दशमर्थक एवं शतमर्थक
6. चतुर्थक
7. दशमर्थक
8. शतमर्थक
9. चतुर्थक, दशमर्थक एवं शतमर्थक की गणना
10. बहुलक
11. बहुलक के गुण
12. बहुलक की प्रकृति एवं महत्व
13. औसत का चयन

इकाई –20 विक्षेपण की मापें: । परिसर माध्य एवं चतुर्थक विचलन

1. विक्षेपण अथवा अपकिरण की मापें
2. माध्य विचलन
3. प्रसरण
4. सामूहिक प्रसरण

इकाई –21 विक्षेपण की मापें –।। प्रमाप विचलन एवं विषमता

1. प्रमाप विचलन एवं प्रसरण गुणांक

2. सामूहिक प्रमाप विचलन
3. समान्तर माध्य एवं प्रमाप विचलन
4. अशुद्धियों का सुधार
5. विक्षेपण की अन्य मापें
6. लारेंज वक्र
7. ऋणात्मक विषम वक्र
8. ककुरता शीर्षक

चतुर्थ खण्ड

इकाई –22 द्विचर समंकों का विश्लेषण – अवर्गीकृत समंक

1. द्विचर समंक
2. प्रतीपगमन एवं सहसंबंध
3. न्युनतम वर्ग रीति
4. प्रतीपगमन समीकरण का निर्धारण
5. सहसम्बन्ध विश्लेषण
6. सहसम्बन्ध विश्लेषण से सम्बन्धित कुछ सावधानियॉ
7. कोटिक्रम समंकों में सहसम्बन्ध

इकाई –23 द्विचर समंकों का विश्लेषण वर्गीकृत समंक

1. वर्गीकृत सारणियां
2. प्रतीपगमन समीकरण का निर्धारण
3. सह सम्बन्ध विश्लेषण
4. अनुमान की प्रमाप त्रुटि

इकाई –24 द्विचर समंकों का विश्लेषण–।।। : बहुगुणी प्रतीपगमन– दो स्वतंत्र चर

1. बहुगुणी प्रतीपगमन – दो स्वतंत्रचर

इकाई –25 प्रतिचयनों की विभ्रम एवं सार्थकता परीक्षण

1. प्रतिचयन सिद्धान्त
2. प्रतिचयन से सम्बन्धित प्रमुख अवधारणायें
3. प्रतिचयन बंटन
4. प्रतिचयन बंटन एवं प्रमाण विभ्रम के उपयोग

इकाई –26 सूचकांक

1. अवधारणा
2. विशेषताएं
3. सूचकांक रचना करते समय प्रयुक्त सावधानियां
4. सूचकांक निर्माण
5. समय उत्क्राम्यता परीक्षण व्याख्या तथा उदाहरण
6. तत्व उत्क्राम्यता परीक्षण

इकाई –27 उपभोक्ता मूल्य सूचकांक

1. अवधारणा
2. मान्यताएं
3. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक
4. उपभोक्ता मूल्य सूचकांकों की रचना में कठिनाइयां
5. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक समूही व्यय रीति
6. उपभोक्ता मूल्य सूचकांकः पारिवारिक बजट रीति
7. महत्व तथा उपयोग
8. भारत में थोक मूल्य सूचकांक

9. भारत में उपभोक्ता मूल्य सूंचकांक

इकाई –28 काल श्रेणी विश्लेषण

1. काल श्रेणी
2. काल श्रेणी के संघटक
3. अल्पकालीन संघटक
4. काल श्रेणी का विघटन या विश्लेषण
5. प्रवृत्ति व विकास दर
6. प्रवृत्ति का निर्धारण व विकास दर की गणना

खण्ड पॉच

इकाई –29 समष्टि आंकड़ों की प्रकृति एवं स्रोतः राष्ट्रीय आय

1. भारत में राष्ट्रीय आय की गणना
2. राष्ट्रीय आय समंकों की प्रकृति
3. विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय आय समंकों के स्रोत
4. राष्ट्रीय आय अनुमान श्रृंखलाएं

इकाई –30 समष्टि आंकड़ों की प्रकृति एवं स्रोत : मूल्य स्तर एवं मुद्रा पूर्ति

1. थोक मूल्य सूचकांक
2. थोक मूल्य सूचकांक की नई श्रृंखला
3. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक
4. औद्योगिक श्रमिक उपभोक्ता मूल्य
5. मुद्रा पूर्ति समंक – प्रकृति व स्रोत
6. मुद्रा स्टाक में परिवर्तन के कारण
7. रिजर्व मुद्रा के घटक एवं उसमें परिवर्तन

इकाई –31 जनगणना सर्वेक्षण

1. जनगणना के लिये अधिनियम
2. जनगणना की विधियॉ
3. जनगणना संघटन
4. जनगणना 1951
5. जनगणना 1961
6. जनगणना 1971
7. जनगणना 1981
8. जनगणना 1991

इकाई –32 राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण

1. सामाजिक – आर्थिक सर्वेक्षण
2. वार्षिक उद्योग सवेक्षण
3. फसल अनुमान सर्वेक्षण

MAEC - 04

श्रम अर्थशास्त्र

प्रथम खण्ड श्रम बाजार

इकाई –01 श्रम की अवधारणा

1. श्रम का अर्थ
2. श्रम के प्रकार
3. श्रम की विशेषताएं
4. श्रम समस्याएं
5. श्रम का महत्व
6. श्रम व श्रम अर्थशास्त्र
7. कार्य की अवधारणा व क्षेत्र
8. रोजगार की अवधारणा व क्षेत्र
9. श्रम उत्पादन के साधन के रूप में
10. बेरोजगारी की समस्या

इकाई –02 श्रम अर्थशास्त्र अर्थ, क्षेत्र एव ंमहत्व

1. श्रम अर्थशास्त्र का क्षेत्र
2. कार्यबल में महिलाएं
3. श्रम अर्थव्यवस्था का महत्व
4. बाल श्रम

इकाई –03 श्रम बाजार

1. श्रम बाजार के प्रतिरूप
2. श्रम बाजार की प्रगतिशीलता
3. विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में श्रम बाजार का द्वैतवाद
4. भारत में श्रम बाजार

इकाई –04 श्रम पूर्ति की अवधारणा

1. श्रम पूर्ति वक्र
2. एक फर्म के लिए श्रम पूर्ति वक्र
3. सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में श्रमपूर्ति
4. श्रम पूर्ति में महिलाएं
5. महिलाओं की मजदूरी में अन्तर के कारण

6. भारत में महिला श्रम का मुख्य कार्यक्षेत्र

इकाई –05 श्रम की मांग एवं श्रम की मांग के सिद्धान्त

1. श्रम की मांग
2. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत संतुलन स्तर पर मजदूरी एवं रोजगार
3. अपूर्ण प्रतियोगी बाजार में संतुलन
4. न्यूनतम मजदूरी

इकाई –06 श्रम उत्पादकता

1. उत्पादकता का अभिप्राय
2. उत्पादकता की माप
3. श्रम की उत्पादकता को निर्धारित करने वाले तत्व
4. श्रम की उत्पादकता में वृद्धि के उपाय, एवं सुझाव

इकाई –07 विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था में श्रम समस्याएं

1. श्रम समस्याओं के कारण
2. विकासोनमुख अर्थव्यवस्था में श्रमिकों की विशेषताएं

इकाई –08 बेरोजगारी एवं अर्द्धरोजगार

1. बेरोजगारी का अर्थ
2. दृश्य अर्द्धरोजगार का माप
3. बेरोजगारी के अन्य माप
4. भारत में बेरोजगारी के अनुमान
5. बेरोजगारी के कारण
6. बेरोजगारी दूर करने में सरकारी नीति
7. मुख्य रोजगार कार्यक्रम
8. छिपी हुई बेरोजगारी एवं पूजी निर्माण

द्वितीय खण्ड श्रमशक्ति संरचना एवं जनशक्ति नियोजन

इकाई –09 जनसंख्या संरचना और जनशक्ति नियोजन

1. जनसंख्या का व्यावसायिक विभाजन
2. भारत में व्यावसायिक संरचना
3. व्यावसायिक ढांचे की स्थिति का विश्लेषण
4. जनसंख्या व व्यावसायिक वितरण में अपरिवर्तनशीलता के कारण

इकाई –10 भारतीय वैज्ञानिक पुनर्गठन और स्वचालिता के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन एवं रोजगार

1. तकनीकी का अर्थ एवं अवधारणा
2. वैज्ञानिक पुर्नगठन का अर्थ एवं अवधारणा
3. स्वचालिता का अर्थ एवं अवधारणा
4. भारत में रोजगार की स्थिति
5. तकनीकी परिवर्तन एवं रोजगार
6. वैज्ञानिक पुनर्गठन का प्रभाव
7. स्वचालिता का प्रभाव

इकाई –11 तकनीकी द्वैतवाद तथा ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में अनौपचारिक क्षेत्र का विकास

1. तकनीकी द्वैतवाद
2. अनौपचारिक क्षेत्र का परिमाण
3. अनौपचारिक क्षेत्र की समस्याएं
4. अनौपचारिक क्षेत्र उद्यमों की पहचान

इकाई –12 श्रम की गतिशीलता एवं प्रवास

1. श्रम शक्ति के प्रवास की प्रक्रिया

2. श्रम के प्रवास के कारण
3. भारत में आन्तरिक प्रवास के रूप
4. प्रवास के परिणाम

इकाई –13 नियोजन हेतु श्रम की मांग एवं आपूर्ति के प्रक्षेपण की विधियां

1. प्रक्षेपण की विधियॉं
2. आगत निर्गत मॉडल के मुख्य तत्व

इकाई –14 रोजगार सृजन कार्यक्रम

1. भारत में बेरोजगारी का स्वरूप
2. भारत में बेरोजगारी के अनुमान
3. भारत में रोजगार की उननितियॉं
4. रोजगार संरचना
5. भारत में बेरोजगारी संबंधी मुख्य लक्षण
6. रोजगार बढ़ाने संबंधी सरकारी नीति
7. समन्वित ग्राम विकास कार्यक्रम
8. रोजगार प्रेरित विकास रणनीति
9. ग्रामीण रोजगार के लिए नई पहल
10. रोजगार नीति में परिवर्तन और जनशक्ति आयोजन हेतु सुझाव

तृतीय खण्ड मजदूरी सिद्धान्त एवं नीति

इकाई –15

1. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत मजदूरी निर्धारण
2. अपूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत मजदूरी निर्धारण
3. द्विपक्षीय एकाधिकार मॉडल

इकाई –16 संस्थागत व सौदाकारी सिद्धान्त

1. मजदूरी के सौदाकारी सिद्धानत व संस्थागत सिद्धान्त
2. सौदाकारी सिद्धान्त के बारे में जे.आर.हिक्स का मत
3. सौदाकारी सिद्धान्त के बारे में शैकल के विचार
4. सौदाकारी के बारे में पेन के विचार एवं उसका मॉडल
5. सौदाकारी सिद्धान्त की आलोचनाएं
6. सौदाकारी की सफलता की शर्तें

इकाई –17 मजदूरी ढांचा और मजदूरी भिन्नता

1. मजदूरी भिन्नता
2. मजदूरी भिन्नता के प्रकार
3. पुरूषों तथा स्त्रियों की मजदूरियों में अन्तर के कारण

इकाई –18 मजदूरी भुगतान की पद्धतियॉं

1. मजदूरी बनाम वेतन
2. न्यूनतम मजदूरी, आजीविका मजदूरी एवं उचित मजदूरी
3. मजदूरी पद्धतियॉं एवं उनके प्रकार
4. विभिन्न प्रेरणात्मक पद्धतियॉं
5. बोनस

इकाई –19 विकासशील देशों में मजदूरी नीति : न्यूनतम मजदूरी उचित मजदूरी एवं पर्याप्त मजदूरी

1. मजदूरी नीति से आशय
2. न्यूनतम मजदूरी , उचित मजदूरी, पर्याप्त मजदूरी

इकाई –20 भारत में न्यूनतम मजदूरी

1. न्यूनतम मजदूरी निर्धारण

2. उच्च मजदूरी की अर्थव्यवस्था के निहितार्थ
3. विभिन्न उ़द्योगें तथा राज्यों में श्रमिकों की मजदूरी
4. राष्ट्रीय न्यूनतम समय मजदूरी
5. भारत में न्यूनतम मजदूरी की आवश्यकता
6. न्यूनतम मजदूरी कानून के उद्देश्य
7. न्यूनतम मजदूरी अधिनियम
8. भारत में बोनस की समस्या

चतुर्थ खण्ड श्रम सम्बन्ध एवं श्रम संघवाद

इकाई –21 श्रम सम्बन्ध अर्थ एवं क्षेत्र : श्रम सम्बन्धों का बदलता प्रतिमान, औद्योगिक सम्बन्ध व्यवस्था

1. श्रम सम्बन्धों का बदलता प्रतिमान
2. औद्योगिक सम्बन्ध व्यवस्था
3. भारत में श्रम सम्बन्धों की आधुनिक प्रवृत्तियॉ

इकाई –22 भारत में कृषि श्रम

1. कृषि श्रम के प्रकार
2. ग्रामीण श्रम जॉच
3. कृषि श्रम की मुख्य विशेषताएं
4. ग्रामीण श्रमिकों को संगठित करने की योजनाएं

इकाई –23 श्रम संघवाद

1. श्रम संघ की परिभाषा एवं प्रकार, उद्देश्य कार्य
2. भारत में श्रम संघ का उदगम एवं विकास
3. श्रम संघ की वित्त व्यवस्था
4. श्रम संघ के लाभ , हानि
5. श्रम संघ आन्दोलन की कमियां एवं संघों को सुदृढ़ करने के उपाय
6. उचित पारितोषण निर्धारणतायें एवं संघों का महत्व

इकाई –24 भारत में श्रमिकसंघों का उदय संरचना एवं समस्याएं

1. श्रमिक संघ का अर्थ, उदय एवं संघों का इतिहास
2. श्रमिक संघों की वर्तमान स्थिति
3. श्रमिक संघों के कार्य एवं उद्देश्य
4. उद्देश्यों को प्राप्त करने की विधियॉ
5. भारतीय श्रमिक संघों की संरचना और समस्याएं

इकाई –25 औद्योगिक शान्ति बचाव और समझौते

1. औद्योगिक विवादों से बचाव के उपाय
2. औद्योगिक विवादों का निपटारा

इकाई –26 औद्योगिक सम्बन्ध तंत्र

1. औद्योगिक सम्बन्धों की कुशलता
2. श्रमिकों की भागीदारी वाला व्यवस्थापक मण्डल

इकाई –27 सामूहिक सौदेबाजी

1. सामूहिक सौदेबाजी की सफलता के लिए आवश्यकता शर्तें , आवश्यकता और महत्व
2. सामूहिक सौदेबाजी के प्रकार, विधियां एवं सामूहिक सौदेबाजी में आने वाली बाधाएं
3. भारत में सामूहिक सौदेबाजी, सामूहिक सौदेबाजी के विरूद्ध तर्क एवं तत्व ।

इकाई –28 अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन

1. अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के मूलभूत सिद्धान्त

2. सदस्यता प्राप्त करने की प्रक्रिया वित्त व्यवस्था

3. अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की संरचना, संगठन के कार्य एवं गतिविधियां, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन एवं भारत आई. एल. ओ. के कार्य का आंकलन

पंचम खण्ड श्रम कल्याण एवं सामाजिक सुरक्षा

इकाई –29 श्रम कल्याण अवधारणा एवं संरचनात्मक ढॉचा

1. श्रमिक कल्याण के सिद्धान्त एवं श्रम कल्याण के प्रति दृष्टिकोण

इकाई –30 सामाजिक सुरक्षा सामाजिक सहायता एवं सामाजिक बीमा

1. सामाजिक सुरक्षा, प्रकार, सामाजिक बीमा के लाभ एवं सामाजिक सुरक्षा के माप, सामाजिक सुरक्षा का क्षेत्र, सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों का मूल्यांकन

इकाई –31 भारत में सामाजिक सुरक्षा

1. भारत में सामाजिक सुरक्षा के विचार का विकास,
2. भारत में सामाजिक सुरक्षा के उपाय, सामाजिक सुरक्षा के विचारणीय बिन्दु

इकाई –32 श्रम कल्याण योजनाएं एवं संस्थाएं

1. औद्योगिक श्रमिकों की आवास व्यवस्था स्वास्थ्य योजनांएं,
2. कल्याणकारी संस्थाएं, ऐच्छिक संस्थाएं

इकाई –33 भारत में महिला एवं बालश्रम

बाल श्रम, महिला श्रम

इकाई –34 भारत में ग्रामीण श्रम

1. ग्रामीण रोजगार के प्रकार, ग्रामीण श्रम शक्ति का परिमाप, मुख्य मजदूरों (ग्रामीण) का वर्गीकरण।
2. ग्रामीण बेरोजगारी का विस्तार, वर्तमान प्रवृत्ति और आठवीं योजना के अनुमान
3. ग्रामीण श्रम और गरीबी, कृषि श्रम, कृषि मजदूरी, बंधुआ मजदूरी
4. बेरोजगारी और अल्परोजगार के उन्मूलन के लिए प्रारम्भ की गई योजनाएं एवं इनके प्रभाव ।

MAEC - 05

अर्थशास्त्र की शोध प्रणाली

इकाई–1	सामाजिक अनुसंधान की प्रकृति
इकाई–2	सामाजिक आर्थिक अनुसंधान एवं अनुसंधान प्राविधियां
इकाई–3	प्रश्नावली एवं साक्षात्कार
इकाई–4	समंको का प्रसंस्करण एवं विश्लेषण
इकाई–5	प्रायिकता, यादृच्छिक चर, वंटन फलन् एवं गणितीय प्रत्याशा
इकाई–6	संयुक्त एवं सप्रतिबन्ध प्रायिकता वंटन, प्रसम्भाष्य स्वतंत्रता
इकाई–7	प्रतिचयन सिद्धान्त एवं प्रतिदर्श वंटन
इकाई–8	परिकल्पना–परीक्षण
इकाई–9	सरल प्रतीपगमन समीकरण
इकाई–10	सरल प्रतीपगमन की मान्यताएं एवं समस्याएं
इकाई–11	युगपत् समीकरण मॉडल एवं अभिज्ञानता
इकाई–12	कारणता , ग्रैंगर, सदिश स्वप्रतीपगमन
इकाई–13	इकाई मूल परीक्षण एवं सहयुग्मन
इकाई–14	प्रतिवेदन लेखन

MAEC - 06

आर्थिक सिद्धान्त – द्वितीय

प्रथम खण्ड राष्ट्रीय आय – I

इकाई –01 राष्ट्रीय आय की अवधारणा

1. राष्ट्रीय आय का अवधारणा : ऐतिहासिक विवेचन
2. राष्ट्रीय आय की अवधारणा : आधुनिक दृष्टिकोण
3. सकल राष्ट्रीय उत्पाद
4. शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद
5. राष्ट्रीय आय
6. व्यक्तिगत आय
7. प्रयोज्य आय
8. वास्तविक सकल राष्ट्रीय उत्पाद बनाम नामिक सकल राष्ट्रीय उत्पाद

इकाई –02 राष्ट्रीय आय की संरचना

1. सकल राष्ट्रीय उत्पाद की संरचना
2. सकल राष्ट्रीय आय की संरचना
3. सकल राष्ट्रीय उत्पाद में सम्मिलित नहीं होने वाले घटक
4. राष्ट्रीय आय अनुमानों का महत्व

इकाई –03 राष्ट्रीय आय के माप की विधियॉ

1. राष्ट्रीय आय लेखांकन
2. राष्ट्रीय आय के माप की विधियां
3. उत्पादन, आय और व्यय की समानिका
4. विकासशील देशों में राष्ट्रीय आय के माप में कठिनाइयां

इकाई –04 राष्ट्रीय आय के संतुलन स्तर का निर्धारण

1. केन्ज का दृष्टिकोण एवं वैचारिक क्रान्ति
2. आय के संतुलन स्तर का निर्धारण
3. समग्र मांग वक्र

इकाई –05 बचत विनियोग व आय में सम्बन्ध

1. बचत व विनियोग की परम्परावादी संकल्पना
2. परम्परावादी बचत व विनियोग मॉडल की आलोचना
3. केन्जयन मॉडल में बचत व विनियोग
4. समग्र व्यय फलन व आय

5. समकालिक गुणक विश्लेषण व आय में वृद्धि
6. समयावधि गुणक व साम्य आय
7. स्वायत्त विनियोग में सतत स्थिर वृद्धि व साम्य आय

इकाई –.6 सरकारी घाटे का बजट भुगतान समतोलन घाटा तथा राष्ट्रीय आय का सम्बन्ध

1. आय की सरलीकृत निर्धारण प्रक्रिया
2. आय निर्धारण में सरकारी क्षेत्र का समावेशन
3. नीतियों का अनुकूलतम मिश्रण

द्वितीय खण्ड राष्ट्रीय आय – ।।

इकाई –07 आय तथा उत्पाद संतुलन में परिवर्तन गुणक

1. आय तथा उत्पाद संतुलन का निर्धारण
2. गुणक के सिद्धान्त
3. काहन का रोजगार गुणक
4. केन्स का निवेश गुणक
5. स्थैतिक बनाम प्रावैगिक गुणक
6. प्रावैगिक विदेशी व्यापार गुणक
7. करों का तथा सरकारी व्यय का गुणक पर सम्मिलित प्रभाव
8. मैट्रिक्स गुणक
9. गुणक सिद्धान्त का महत्व
10. गुणक सिद्धान्त की आलोचनाएं
11. आय प्रवाह में रिसाव और उसका गुणक पर प्रभाव

इकाई –08 संतुलित बजट गुणक

1. संतुलित बजट गुणक का अर्थ
2. कार्य प्रणाली
3. समीकरण द्वारा संतुलित बजट गुणक के मूल्य की गणना
4. रेखाचित्र द्वारा निरूपण
5. संतुलित बजट गुणक : आनुपातिक कर

इकाई –09 मुद्रा की मॉग

1. मुद्रा का अविष्कार
2. मुद्रा की परिभाषा
3. मुद्रा की मॉग

इकाई –10 IS-LM वक्र विश्लेषण

1. IS वक्र की व्युत्पत्ति
2. LM वक्र की व्युत्पत्ति
3. सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के दोनों क्षेत्रों में साम्य की स्थिति

इकाई –11 विदेशी व्यापार एवं राष्ट्रीय आय

1. खुली अर्थव्यवस्था में आय का साम्य स्तर
2. निर्यात फलन
3. आयात फलन
4. विदेशी व्यापार गुणक
5. भुगतान शेष में घाटा तथा पूंजी प्रवाह
6. भुगतान शेष की संरचना
7. भुगतान शेष : बही खाता अवधारणा
8. व्यापार शेष, चालू खाते का शेष तथा भुगतान शेष

9. व्यापार शेष की बाकी
10. भुगतान शेष में संतुलन एव असंतुलन
11. पूंजी प्रवाह
12. स्वायत्त पूंजी प्रवाह
13. अनुग्रहीय पूंजी : अन्तःप्रवाह

इकाई –12 आन्तरिक एंव बाह्य संतुलन

1. आन्तरिक एवं बाह्य संतुलन की अभिधारणा
2. लोचपूर्ण आय तथा लोचपुर्ण कीमतों के साथ बाह्य तथा आन्तरिक संतुलन की प्राप्ति
3. आन्तरिक एवं बाह्य असंतुलनों का वर्गीकरण तथा उनको संतुलित करने के प्रयत्न
4. पूंजी के आवागमन की स्थिति में आन्तरिक एवं बाह्य संतुलन की प्राप्ति

तृतीय खण्ड कीमतें एवं रोजगार

इकाई –13 उत्पादन फलन, श्रम बाजार और राष्ट्रीय आय का पूर्ति पक्ष

1. उत्पादन फलन
2. श्रम बाजार में सन्तुलन एवं श्रम का मांग फलन
3. पूर्ति पक्षीय आय स्तर
4. राजकोषीय नीति एवं रोजगार तथा आय स्तर

इकाई –14 वास्तविक मजदूरी प्रतिरूप, मौद्रिक मजदूरी प्रतिरूप और अनम्य मजदूरी , समग्र पूर्ति फलन

1. वास्तविक मजदूरी प्रतिरूप और समग्र पूर्ति फलन
2. मौद्रिक मजदूरी प्रतिरूप,
3. युक्तिसंगत प्रत्याशाओं का प्रसंविदा प्रतिरूप

इकाई –15 मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त

1. मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त का नव प्रतिष्ठित रूप
2. नकद कोष अथवा केम्ब्रिज समीकरण
3. नकद सौदा समीकरण एवं नकद कोष समीकरण की तुलना

इकाई –16 मिल्टन फ्रीडमैन का मुद्रा परिमाण सिद्धानत

1. फ्रीडमैन का परिमाण सिद्धान्त
2. सिद्धान्त की आलोचनाएं

इकाई –17 मुद्रा स्फीति के सिद्धान्त – मांग प्रोत्साहित एवं लागत जनित स्फीति

1. मुद्रा स्फीति का अर्थ
2. विभिन्न देशों में मुद्रास्फीति
3. मुद्रा स्फीति के प्रकार
4. मुद्रा स्फीति के प्रभाव

इकाई –18 समग्र मांग, समग्र पूर्ति तथा मूल्य स्फीति

1. मांग प्रेरित एवं लागत प्रेरित स्फीति की व्याख्या
2. समग्र मांग तथा मूल्य स्फीति
3. समग्र पूर्ति एवं मूल्य स्फीति
4. संरचनात्मक विसंतुलन तथा स्फीति
5. स्फीति निरोधक नीतियॉ

इकाई –19 मंदी स्फीति, स्फीति प्रत्याशायें एवं स्फीति विरोधी नीतियॉ

1. मंदी स्फीति
2. स्फीति प्रत्याशाएं
3. स्फीति विरोधी नीतियॉ

इकाई –20 मौद्रिक नीति के यंत्र

1. मौद्रिक नीति का अर्थ

2. मौद्रिक नीति के उद्देश्य
3. मौद्रिक नीति तथा आर्थिक विकास
4. मौद्रिक नीति के उपकरण अथवा यंत्र
5. विकासशील अर्थव्यवस्था तथा मौद्रिक नीति

चतुर्थ खण्ड विकास एवं उच्चावन

इकाई –21 विकास का प्रतिष्ठित सिद्धान्त

1. एडम स्मिथ
2. डेविड रिकार्डो
3. जॉन स्टुअर्ट मिल

इकाई –22 कार्लमार्क्स का आर्थिक विकास मॉडल

1. इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या
2. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद
3. वर्ग संघर्ष
4. अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त
5. पूंजी संचय
6. पूंजीवादी संकट
7. मार्क्स के पूंजीवादी आर्थिक विकास के मॉडल का आलोचनात्मक परीक्षण
8. विकासशील देशों में मार्क्स मॉडल की उपादेयता

इकाई –23 नवसंस्थापक मॉडल

1. मान्यताएं
2. विकास सिद्धान्त का विश्लेषण
3. आर्थिक विकास की दर में परिवर्तन
4. नवसंस्थापक मॉडल व तकनीकि परिवर्तन
5. स्थिर प्रगति की दशाएं
6. नवसंस्थापक अर्थशास्त्रियों के सिद्धान्त का मूल्यांकन

इकाई –24 विकास का हेरोड – डोमर मॉडल

1. मॉडल का अर्थ
2. डोमर का मॉडल
3. आर्थिक विकास की दर में परिवर्तन
4. हेरोड–डोमर मॉडल की सीमाएं
5. हेरोड–डोमर मॉडल और विकासशील देश

इकाई –25 जोन राबिन्सन का आर्थिक विकास का मॉडल

1. मॉडल की मान्यताएं
2. मॉडल की व्याख्या
3. स्वर्णावस्था
4. सन्तुलन के निर्धारक
5. समीक्षात्मक मूल्यांकन
6. मॉडल की प्रमुख कमजोरियॉ
7. विकासशील अर्थव्यवस्था में मॉडल की व्यावहारिकता

इकाई –26 आर्थिक विकास का महालनोबिस मॉडल

1. महालनोबिस मॉडल
2. द्विक्षेत्रीय मॉडल
3. चार क्षेत्रीय मॉडल
4. महालनोबिस मॉडल की मान्यताएं

5. महालनोबिस मॉडल का मूल्यांकन

पंचम खण्ड उत्पादन उच्चावचन

इकाई –27 सैम्युल्सन का व्यापारिक चक्र सिद्धान्त

1. सैम्युल्सन का सिद्धान्त
2. सैम्युल्सन के सिद्धान्त की मान्यताएं
3. सिद्धान्त की समीकरणी अभिव्यक्ति
4. गुणक त्वरक की अन्योन्य क्रिया प्रदर्शक तालिका
5. व्यापार चक्रीय विविध रूप
6. पांचो नमूनों का एक साथ चित्रण
7. वास्तविकता के आधार पर नमूनों पर विचार
8. सैम्युल्सन के सिद्धान्त का सारांश
9. सिद्धान्त की समीक्षा

इकाई –28 हिक्स का व्यापारिक चक्रीय सिद्धान्त

1. सैम्युल्सन और हिक्स की व्याख्याओं में अन्तर
2. हिक्स का सिद्धान्त
3. हिक्स के सिद्धान्त की मान्यताएं
4. सिद्धान्त का समीकरण रूप
5. सिद्धान्त का रेखाचित्रीय निरूपण
6. सिद्धान्त का सारांश
7. सिद्धान्त की समीक्षा

इकाई –29 काल्डॉर का व्यापार चक्र सिद्धान्त

1. व्यापार चक्रों का आशय
2. काल्डॉर का व्यापार चक्र सिद्धान्त
3. I और S फलनों की रेखीयता और आय स्तर
4. विविध आय स्तर एवं गैर रेखीय I फलन
5. विविध फलन स्तर एवं गैर रेखीय S फलन
6. निवेश और बचत फलनों की अन्योन्य क्रिया

इकाई –30 व्यापार चक्र विरोधक नीतियॉं

1. समष्टिगत आर्थिक नीतियों का आधार
2. नीतियों के उद्देश्य
3. मौद्रिक नीति
4. मौद्रिक नीति के औजार
5. मौद्रिक नीति की सीमायें
6. राजकोषीय नीति का आशय
7. चक्रीयता विरोधी राजकोषीय नीति
8. चक्रीयता विरोधी नीति और अन्तरालों का समस्या
9. राजकोषीय नीति के उपकरण
10. राजकोषीय नीति की सीमायें

इकाई –31 मौद्रिक नीति की प्रभावकता

1. प्रभावकता के सम्बन्ध में सामान्य धारणायें
2. मौद्रिक नीति की प्रभावकता से आशय
3. मन्दी में मौद्रिक नीति की प्रभावकता
4. तेजीकाल से मौद्रिक नीति की प्रभावकता

5. तेजी काल में मौद्रिक नीति की उपयोगिता
6. मुद्रा की मात्रा में परिवर्तन के प्रभाव

इकाई –32 विकासशील देशों में मौद्रिक नीति की भूमिका

1. विकासशील देशों के संदर्भ में मौद्रिक नीति का आशय
2. मौद्रिक नीति का विकासशील देशों में औचित्य
3. विकासशील देश और मौद्रिक नीति के उद्देश्य
4. मौद्रिक नीति की कार्यशीलता
5. मौद्रिक नीति और उसके उपकरण
6. साख नियंत्रण के उपकरण
7. मौद्रिक नीति की विकासशील देशों में सीमायें
8. मौद्रिक नीति की प्रभावकता में वृद्धि के उपाय

इकाई –33 राजकोषीय नीति की प्रभावकता

1. प्रभावकता सम्बन्धी सामान्य धारणायें
2. मन्दी के दौर में राजकोषीय नीति की प्रभावकता
3. भीड़ जनित बहिर्गत प्रभाव
4. तेजी में राजकोषीय नीति की प्रभावकता में सीमायें

इकाई –34 विकासाशील देशों में राजकोषीय नीति की भूमिका

1. विकासशील और विकसित देशों में राजकोषीय नीति का अन्तर
2. राजकोषीय नीति की सापेक्षिक भूमिका
3. पूंजी निर्माण और राजकोषीय उपाय
4. आर्थिक विषमता में कमी और राजकोषीय नीति
5. आर्थिक स्थिरता और राजकोषीय नीति
6. विदेशी विनिमय और राजकोषीय नीति
7. विकासोन्मुख राजकोषीय नीति की सीमायें

MAEC - 07

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र

प्रथम खण्ड अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त

इकाई –01

1. तुलनात्मक लागतों का प्रतिष्ठित सिद्धान्त
2. तुलनात्मक लागत सिद्धान्त की मान्यताएं, व्याख्या
3. रिकार्डो द्वारा व्यापार लाभ का विश्लेषण
4. रिकार्डों के सिद्धान्त की आलोचना एवं आनुभाविक प्रमाणीकरण

इकाई –02 मिल के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रतिपूरक मांग का सिद्धान्त

1. मिल का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त
2. संक्षिप्तीकरण
3. स्वतंत्र व्यापार पर मिल के विचार
4. संरक्षण पर मिल के विचार
5. मिल के सिद्धान्त का आलोचनात्मक मूल्यांकन

इकाई –03 टॉजिग का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त

1. मान्यताएं और तीन तरह की लागतें
2. लागतों में निरपेक्ष व समान अन्तर
3. तुलनात्मक लागतें और कीमतें
4. भिन्न भिन्न देशों में मजदूरियॉ
5 मजदूरियां समरूप नहीं, गैर प्रतिस्पर्द्धी समूह

इकाई –04 हेबरलर का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त

1. उत्पादन सम्भावना वक्र
2. अवसर लागत, अवसर लागत वक्र

इकाई –05 हैक्शचर ओहलिन का सिद्धान्त तथा साधन कीमत समानीकरण प्रमेय

1. सिद्धान्त की मान्यताएं
2. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के मानदण्ड
3. हैक्शचर ओहलिन मॉडल, सिद्धान्त एवं आलोचनाएं
4. साधन कीमत समानीकरण सिद्धान्त की आलोचना

इकाई –06 अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मॉडलों का प्रमाणीकरण

1. तुलनात्मक लागत सिद्धान्त का प्रमाणीकरण
2. प्रमाणीकरण जांचों का आलोचनात्मक अध्ययन
3. रिकार्डो सिद्धानत के प्रमाणीकरण जॉचों के निष्कर्ष
4. हैक्शचर ओहलीन सिद्धान्त का प्रमाणीकरण
5. टोटेमोटो इचीमूरा का अध्ययन
6. वाहल का अध्ययन
7. स्टालपर व रोसकेम्प का अध्ययन
8. आर भारद्वाज का अध्ययन
9. हैक्शचर ओहलिन प्रमेय के प्रमाणीकरण जॉचों के निष्कर्ष

इकाई –07 व्यापार स्वरूप के निर्धारक नवीन सिद्धान्त

1. आधुनिक पूर्ति मांग सिद्धान्त
2. नवीन सिद्धान्त

खण्ड तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नीति

इकाई –14 तटकर : तटकर के प्रभाव, तटकर की लागतें, लाभ एवं प्रभावी संरक्षण दर

1. तटकर के प्रभाव, लागतें एवं लाभ
2. प्रभावी संरक्षण दर एवं अनुकूलतमतटकर

इकाई –15 अनुकूलतम प्रशुल्क

1. अनुकूलतम प्रशुल्क से अभिप्राय
2. अनुकूलतम प्रशुल्क का चित्र द्वारा निरूपण
3. अनुकूलतम प्रशुल्क व अर्पण वक्र की लोच
4. इकाई लोच व अनन्त लोच का महत्व
5. अनुकूलतम प्रशुल्क की अवधारणा का मूल्यांकन

इकाई –16 आयात अभ्यंश

1. प्रमुख बिन्दु
2. आयात अभ्यंशों के प्रकार
3. आयात अभ्यंश और प्रशुल्क में अन्तर और अभ्यंश के प्रभाव

इकाई –17 व्यापार में हस्तक्षेप की आवश्यकता – शिशु उद्योग, बाजार विकृतियॉ और बाह्य मितव्ययिताएं

1. तटकर के लिए शिशु उद्योग तर्क
2. बाह्य मितव्ययिताएं
3. बाजार अपूर्णताएं / घरेलू विकृतियां

इकाई –18 विकासशील देशों की व्यापारिक नीति

1. व्यापारिक नीति
2. विदेशी सहायता
3. आयात नीति आयात प्रतिबन्ध और प्रतिस्थापन
4. आयात प्रतिस्थापन

5. निर्यात नीति
6. आयात प्रतिस्थापन अथवा निर्यात सम्वर्द्धन

इकाई –19 चुंगीसंघ का सिद्धान्त एवं आर्थिक एकीकरण

1. स्वतंत्र व्यापार क्षेत्र, चुंगी संघ, साझा बाजार, आर्थिक समुदाय व आर्थिक एकीकरण
2. प्रतियोगी व पूरक अर्थव्यवस्थाएं
3. सामान्य साम्य विश्लेषण
4. चुंगी संघ के गत्यात्मक प्रभाव

चतुर्थ खण्ड भुगतान संतुलन एवं विनिमय दरें

इकाई –20 भुगतान सन्तुलन, व्यापार संतुलन व भुगतान संतुलन खाता

1. भुगतान संतुलन की अवधारणा
2. भुगतान संतुलन खाता
3. भुगतान संतुलन एवं व्यापार संतुलन
4. क्या भुगतान संतुलन सदैव संतुलित रहता है
5. भुगतान असंतुलन के कारण व प्रकार
6. समायोजन प्रक्रिया

इकाई –21 भुगतान सन्तुलन में असाम्यता

1. भुगतान सन्तुलन में असाम्यता के प्रकार, कारण
2. भुगतान सन्तुलन की असाम्यता को दूर करने के उपाय व दूर करने के मौद्रिक उपाय, दूर करने के गैर मौद्रिक उपाय एवं अन्य उपाय

इकाई –22 विदेशी विनिमय दर निर्धारण के सिद्धान्त

इकाई –23 स्थिर एवं लचीली विनिमय दरें

1. विदेशी विनिमय दर प्रणालियां एवं नीतियॉ
2. लचीली विनिमय दरें
3. नियंत्रित विनिमय दरें
4. प्रबन्धकीय लचीली दरें

इकाई –24 अवमूल्यन लोचविधि, अवशोषण विधि एवं मौद्रिक नीतियों का समन्वय

1. अवमूल्यन के उद्देश्य और सफलता की शर्तें
2. अवमूल्यन के प्रभाव का विश्लेषण
3. आन्तरिक एवं बाह्य संतुलन मौद्रिक व राजकोषीय नीतियों का समन्वय

इकाई –25 विदेशी सहायता एवं ऋण सेवा भार

1. विदेशी सहायता प्रदान करने के उद्देश्य
2. विदेशी सहायता की आवश्यकता की गणना
3. विदेशी सहायता से सम्बन्धित मुद्दे
4. विदेशी सहायता नीति में अकुशलताएं
5. विदेशी ऋण सेवा भार की समस्या
6. ऋण जाल में फंसे राष्ट्र के समक्ष विकल्प
7. भारतवर्ष की विदेशी ऋण समस्या

पंचम खण्ड अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं एवं भारत

इकाई –26 अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष

1. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के लक्ष्य, कोष के अभ्यंश, कार्य, कोष और समता मूल्य, कोष एवं विनिमय प्रतिबन्ध
2. कोष के कुछ अन्य विशिष्ट प्रावधान
3. अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था में सुधार
4. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की सीमाएं

इकाई –27 विश्व बैंक तथा सम्बद्ध संस्थाएं

1. विश्व बैंक के उद्देश्य बैंक की ऋण क्रियाएं
2. विश्व बैंक की सम्बद्ध संस्थाएं
3. विश्व बैंक द्वारा किये गये कार्यों की समीक्षा

इकाई –28 यूरोपीय मुद्रा बाजार

1. यूरोपीय मुद्रा बाजार, यूरो डालर
2. यूरोपीय मुद्रा बाजार का उदभव तथा विकास
3. यूरो मुद्रा बाजार की कार्य प्रणाली, प्रमुख विशेषताएं
4. अन्तर्राष्ट्रीय वित्त प्रणाली में भूमिका
5. यूरोपीय मुद्रा बाजार के विकास से उत्पन्न समस्याएं

इकाई –29 अल्पकालीन व दीर्घकालीन पूॅंजी अन्तरण

1. पूॅंजी अन्तरणों के प्रकार
2. अन्तर्राष्ट्रीय पूंजी अन्तरणों के विभिन्न प्रकार
3. अन्तर्राष्ट्रीय पूंजी अन्तरणों को प्रभावित करने वाले तत्व
4. अन्तर्राष्ट्रीय पूॅंजी प्रवाहों के प्रभाव

इकाई –30 भारत का विदेशी व्यापार

1. भारत में विदेशी व्यापार की संरचना
2. भारत के विदेशी व्यापार की दिशा

इकाई –31 विश्व के प्रमुख आर्थिक क्षेत्रों के साथ भारत का विदेशी व्यापार

1. विश्व व्यापार के महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्र
2. भारतीय विदेशी व्यापार के विश्व में प्रमुख आर्थिक क्षेत्र
3. विश्व के प्रमुख क्षेत्रों के साथ भारतीय व्यापार की संरचना

MAEC - 08

भारतीय अर्थ शास्त्र का विकास

प्रथम खण्ड भारतीय अर्थव्यवस्था

इकाई –01 भारतीय अर्थव्यवस्था में वृद्धि की प्रवृत्तियॉ

1. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्थव्यवस्था
2. 1951 के बाद आर्थिक नियोजन तथा आर्थिक वृद्धि
3. नियोजन अवधि के दौरान वृद्धि दर, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की दर
4. 1951 के बाद से भारतीय अर्थव्यवस्था में क्षेत्रवार वृद्धि
5. अवर संरचनात्मक सुविधाओं में वृद्धि दर

इकाई –02 भारत में नियोजन एवं विकास प्रकिया नियोजित विकास की समीक्षा

1. पंचवर्षीय योजनाओं के उद्देश्य
2. नियोजित आर्थिक विकास की विशेषताएं , प्रमुख उपलब्धियां
3. नियोजन के कुछ महत्वपूर्ण सबक
4. नियोजित विकास के अप्राप्त उद्देश्य
5. नियोजित विकास की विफलताएं

इकाई –03 विकास की व्यूहरचनाएं – भारी उद्योग बनाम मजदूरी वस्तुंएं उद्देश्य की उपलब्धियां

1. भारी उद्योगों का आशय तथा उनको व्यूहरचना में प्राथमिकता देने के उद्देश्य
2. भारी उद्योग मॉडल की कमियॉ
3. मजदूरी वस्तुओं का अर्थ व उनको उच्च प्राथमिकता देने से लाभ
4. भारत जैसी खुली अर्थव्यवस्था में मजदूरी वस्तु मॉडल की सीमाएं
5. क्या योजना काल में विकास की प्रारम्भिक आधारभूत व्यूहरचना में कोई परिर्वतन किया गया है?
6. भारी उद्योग मॉडल की उपलब्धियां व मूल्यांकन
7. भावी नियोजन की व्यूहरचना में इनका सापेक्ष स्थान क्या होना चाहिए।

इकाई –04 विकेन्द्रित नियोजन पद्धति

1. केन्द्रित व विकेन्द्रित नियोजन में मुख्य अन्तर
2. विकेन्द्रित नियोजन की कार्य पद्धति तथा पंचायती राज संस्थाओं से संबंध
3. विकेन्द्रित नियोजन की दिशा में प्रगति व अनुभव – कर्नाटक, पश्चिम बंगाल व गुजरात में विकेन्द्रित नियोजन
4. विकेन्द्रित नियोजन के मार्ग में बाधांएं व समस्याएं
5. विकेन्द्रित नियोजन की सफलता की आवश्यक शर्तें
6. भारत में विकेन्द्रित नियोजन का भविष्य व सुझाव

इकाई –05 भारत में शिक्षा का विकास

1. संरचना की विशेषताएं
2. संरचना का विकास व शिक्षा, कृषि संरचना पर शिक्षा का प्रभाव
3. औद्योगिक संरचना एवं शिक्षा

द्वितीय खण्ड भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास

इकाई –06 जनसांख्यिकीय आयाम एवं आर्थिक विकास

1. जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक विकास पर प्रभाव
2. जनसंख्या एवं पूंजी निर्माण
3. जनसंख्या वृद्धि का अन्य आर्थिक चरों पर प्रभाव
4. जनसंख्या वृद्धि एवं उत्पादन व बेरोजगारी
5. मानवीय साधन तथा आर्थिक विकास
6. प्रवासन का आर्थिक विकास पर प्रभाव

इकाई –07 बचत एवं निवेश के प्रतिमान

1. बचत का अर्थ और बचत के स्रोत
2. विकासशील देशों में बचत सम्बन्धी समस्या

3. घरेलू बचत बढ़ाने के उपाय
4. बचतों का बाह्य स्रोत
5. भारत में बचतों के स्रोत
6. निवेश का अर्थ
7. भारत की विभिन्न योजना काल अवधियों में बचत की प्रवृत्ति व निवेश प्रवृत्ति

इकाई –08 पूँजी उत्पाद अनुपात एवं इसका प्रभाव

1. पूँजी उत्पाद अनुपात का अर्थ एवं प्रकार
2. पूंजी उत्पाद अनुपात की विशेषताएं
3. अल्प विकसित राष्ट्रों में पूँजी उत्पाद अनुपात
4. पूँजी उत्पाद अनुपात के अध्ययन व प्रयोग का महत्व
5. भारत में पूंजी उत्पाद अनुपात
6. विभिन्न योजना अवधियों में पूँजी उत्पाद अनुपात

इकाई –09 भारत में निर्धनता व असमानता आकार, प्रकृति, कारण तथा इनको कम करने के उपाय

1. निर्धनता का अर्थ, आकार व प्रकृति, कारण
2. निर्धनता कम करने के सरकारी उपाय
3. निर्धनता उन्मूलन के लिए सुझाव
4. असमानता का अर्थ, आकार व प्रकृति
5. आय की असमानता के कारण, कम करने के संबंध में सरकारी उपाय
6. आय की असमानताओं को कम करने के लिए सुझाव

इकाई –10 बेरोजगारी स्वरूप तथा आकार – उद्योगीकरण तथा रोजगार एवं रोजगारनीति

1. बेरोजगारी का स्वरूप, कारण
2. भारत में बेरोजगारी के अनुमान, भारत सरकार की रोजगार सम्बन्धी नीति
3. भारत में शिक्षित वर्ग में बेरोजगारी
4. भारत में उद्योगीकरण तथा रोजगार

तृतीय खण्ड कृषि अर्थव्यवस्था

इकाई –11 कृषि भूमि सम्बन्ध एवं भूमि सुधार

1. कृषि भूमि सम्बन्ध
2. भारत में भूमि सुधार कार्यक्रम

इकाई –12 कृषि निविष्ट / कृषि आगत

कृषि निविष्ट (आगत)

इकाई –13 हरित क्रान्ति

इकाई –14 भारतीय कृषि विकास की उपलब्धियां तथा कमियॉ

1. कृषि विकास की उपलब्धियां
2. नियोजन और कृषि विकास
3. कृषि क्षेत्र में असन्तुलन व कमिया।

इकाई –15 खाद्यान्न आहरण तथा सुरक्षित भण्डार नीति

1. आहरण का अर्थ एवं प्रणाली
2. सुरक्षित भण्डार का अर्थ एवं उद्देश्य
3. भारत में खाद्यान्न नीति का प्रारम्भ एवं विकास
4 आहरण व भण्डार की प्रमुख प्रवृत्तियां
5. आहरण और सुरक्षित भण्डार नीति के लाभ
6. आहरण और भण्डार नीति के दोष

इकाई –16 सार्वजनिक वितरण प्रणाली

1. सार्वजनिक वितरण प्रणाली का अर्थ एवं उद्देश्य
2. भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली का उदय एवं विकास व विशेषताएं
3. सार्वजनिक वितरण प्रणाली का क्षेत्र एवं सुधार तथा वितरण प्रणाली का क्रियान्वयन

चतुर्थ खण्ड भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना

इकाई –17 भारत में औद्योगिक विकास की प्रवृत्ति एवं समस्याएं

1. स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व औद्योगिक विकास : ऐतिहासिक सिंहावलोकन
2. विकास के मार्ग में बाधाएं

इकाई –18 कृषि व उद्योग के मध्य व्यापार शर्तें

1. व्यापार शर्तें प्रकार, कृषि उद्योग अन्तः श्रृंखलाएं
2. व्यापार शर्तों की क्रियात्मक उपयोगिता
3. व्यापार शर्तों की सीमायें

इकाई –19 भारत में क्षेत्रीय विषमताएं

1. प्रति व्यक्ति राज्य घरेलू उत्पादन से अन्तर्प्रान्तीय विभिन्नतायें
2. औद्योगिक एवं आधारिक संरचना विकास का स्वरूप
3. क्षेत्रीय विषमता में कृषि का योगदान
4. क्षेत्रीय विकास के संयुक्त सूचक

इकाई –20 भारत में संतुलित औद्योगिक विकास की नीतियॉ

1. केन्द्रीय विनियोग
2. संस्थागत विता का संवितरण स्वरूप
3. औद्योगिक छितराव के लिए नीतियॉ एवं कार्यक्रम
4. क्षेत्रीय विकास नीति की समीक्षा

इकाई –21 भारतवर्ष में बहुराष्ट्रीय निगम

1. बहुराष्ट्रीय निगमों की विशेषताएं
2. बहुराष्ट्रीय निगमों में प्रवेश में बाधायें
3. व्यवसाय विधि तथा तकनीकी
4. अमेरिका की दशा बिगड़ना
5. पूंजीगत तकनीकी
6. कनाडा तथा भारत के अनुभव

पंचम खण्ड विदेशी व्यापार एवं सार्वजनिक वित्त

इकाई –22 भारतवर्ष की समानान्तर अर्थव्यवस्था

1. कालेधन की परिभाषा, स्रोत तथा क्षेत्र
2. काली आय के अनुमान
3. काले धन को रोकने के उपाय
4. काले धन में वृद्धि के प्रभाव

इकाई –23 भारत का भुगतान सन्तुलन

1. भुगतान सन्तुलन का अर्थ , मदें
2. स्वतंत्रता के पूर्व भुगतान सन्तुलन और उसके उपरान्त भुगतान सन्तुलन
3. भुगतान सन्तुलन में घाटे के कारण
4. भारत सरकार द्वारा प्रतिकूल भुगतान सन्तुलन के समाधान हेतु उपाय
5. भुगतान सन्तुलनकी प्रतिकूलता को दूर करने के उपाय

इकाई –24 निर्यात सम्वर्द्धनऔर आयात प्रतिस्थापन

1. निर्यात सम्बर्द्धन का अर्थ, आवश्यकता
2. निर्यात सम्वर्द्धन के लिए सरकारी प्रयत्न
3. निर्यात सम्वर्द्धन के लिए सुझाव
4. आयात प्रतिस्थापन का अर्थ, प्रगति
5. आयात प्रतिस्थापन से लाभ हानियॉ
6. आयात प्रतिस्थापन के सम्बन्ध में सुझाव

इकाई –25 भारतीय कर व्यवस्था

1. कर की अवधारणा
2. हमारी अर्थव्यवस्था में कराधान की भूमिका
3. भारतवर्ष में कराधान के उद्देश्य

4. केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों के बीच करों का बटवारा
5. महत्वपूर्ण केन्द्रीय कर
6. राज्य सरकारों के महत्वपूर्ण कर
7. प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर
8. भारतीय कर व्यवस्था के महत्वपूर्ण लक्षण
9. कर सुधार की आवश्यकता

इकाई –26 समाज के विभिन्न वर्गों पर करापात

1. करापात की अवधारणा, व्यवहार में करापात
2. करापात तथा समाज के विभिन्न वर्गों का सम्बन्ध
3. कुछ महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष करों का करापात
4. समस्त प्रत्यक्ष करों का करापात
5. अप्रत्यक्ष करों का करापात – अवधारणा सम्बन्धी विचार
6. समाज के विभिन्न वर्गों पर अप्रत्यक्ष करों का करापात

इकाई –27 भारत में सार्वजनिक व्यय की प्रवृत्तियां

1. भारत में सार्वजनिक व्यय–कुछ सामान्य समालोचनाएं
2. सार्वजनिक व्यय सकल राष्ट्रीय उत्पाद के सन्दर्भ में
3. कुल सार्वजनिक व्यय केन्द्र व राज्यों की तुलनात्मक स्थिति
4. विकासात्मक और गैर विकासात्मक व्यय
5. योजना और गैर योजना व्यय
6. उपभोग व पूंजी निर्माण

इकाई –28 भारत में केन्द्र राज्य वित्त सम्बन्ध

1. विषय के अध्ययन का उद्देश्य
2. भारत में संघात्मक वित्तीय व्यवस्था का इतिहास
3. भारतीय संघ में केन्द्र राज्य वित्तीय सम्बन्ध

    1. भारत में वित्त आयोगों का गठन व उनकी सिफारिशें

MAEC - 09

क्षेत्रीय आर्थिक विकास एवं नियोजन

प्रथम खण्ड स्थानिक सिद्धान्त

इकाई –01 अंचल क्षेत्रीय अर्थशास्त्र : महत्व तथा आर्थिक विश्लेषण में स्थान क्षेत्रीय महत्व

1. अंचल क्षेत्रीय अर्थशास्त्र की परिभाषा, आंचल क्षेत्रीय अर्थशास्त्र एवं अंचल क्षेत्रीय समस्याएं
2. आर्थिक विकास में स्थान क्षेत्रीय तत्वों का महत्व व उनसे सहसम्बन्ध, अंचल क्षेत्रीय क्रियाओं को निर्धारित करने वाले घटक व तत्व

इकाई –02 एकाधिकृत बाजार एवं मूल्य निर्धारण

1. अपूर्ण प्रतियोगिता के कारण, प्रकार, एकाधिकृत प्रतियोगिता का अर्थ, विशेषताएं

2. एकाधिकृत प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत एवं उत्पादन निर्धारण,

3. अल्पकाल में फर्म का सन्तुलन तथा कीमत निर्धारण

4. दीर्घकाल में फर्म का साम्य, एकाधिकृत प्रतियोगिता का आलोचनात्मक मूल्यांकन, पूर्ण प्रतियोगिता और एकाधिकृत प्रतियोगिता में अन्तर, एकाधिकार और एकाधिकृत प्रतियोगिता में अन्तर

इकाई –03 स्थानीयकरण के सिद्धान्त

1. स्थानीयकरण का अर्थ, घटक, लाभ हानि, सिद्धान्त

इकाई –04 बाजार के आकार एवं स्वरूप के सिद्धान्त

1. बाजार के निर्धारक तत्व, बाजार के आकार एंव प्रारूप का निर्धारण, बाजार का आकार एवं प्रारूप और भारत का बाजार विस्तार

इकाई –05 साम्यावस्था और असाम्यावस्था सिद्धान्त लौश मॉडल व उसकी आलोचना

1. बाजार दशाए एवं साम्यावस्था, साम्यावस्था पर सैद्धान्तिक व सामान्य विचार वर्णन, क्षेत्रीय नियोजन और साम्यावस्था सिद्धान्त।

इकाई –06 केन्द्रीयकरण की मितव्ययताएं व अमितव्ययताएं विकास ध्रुव का विचार

1. मितव्ययताएं और अमितव्ययताएं, विकास ध्रुव और आइसोडापेन, व्यवहार में एकत्रीकरण विश्लेषण

द्वितीय खण्ड अन्तराल का समष्टि अर्थशास्त्र

इकाई –07 क्षेत्र अवधारणा, प्रकार और पहचान

1. क्षेत्र की अवधारणा, प्रकार, औपचारिक क्षेत्रों की पहचान या चिन्हित करना, कार्यात्मक क्षेत्रों की पहचान

इकाई –08 प्रादेशिक आय लेखा : प्रादेशिक आदा–प्रदा विश्लेषण

प्रादेशिक आय लेखा, लेखा निर्माण, प्रादेशिक इनपुट–आउटपुट विश्लेषण ।

इकाई –09 वस्तुएं एवं पूंजी का अन्तर्प्रादेशिक प्रवाह / चालू एवं पूंजी खातों का सन्तुलन

प्रस्तावना, प्रादेशिक स्तर पर आय लेखे

इकाई –10 प्रादेशिक विकास के सिद्धान्त

प्रादेशिक विकास के सिद्धान्त

इकाई –11 क्षेत्रीय संवृद्धि के सिद्धान्त मिर्डल और हर्षमैन के सिद्धान्तों का समीक्षात्मक मूल्यांकन

मिर्डल का स्प्रेड और बैंकवाश प्रभावों का सिद्धान्त, हर्षमैन का ध्रुवीकरण और नीचे रिवास प्रभाव सिद्धान्त मिर्डल और हर्षमैन के सिद्धान्तों में समानताएं और असमानताएं, सिद्धान्तों की समालोचना

इकाई –12 केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त

केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त, मॉग एवं आपूर्ति, वस्तुओं तथा सेवाओं की सीमा, प्रभाव सीमा एव ंक्रम वरीयता, बाजार की ज्यामिति, श्रेणी श्रृंखला के कार्य, केन्द्रीय स्थलों का भौगोलिक मॉडल, केन्द्रीय स्थल तथा योजना

तृतीय खण्ड क्षेत्रीय नियोजन मॉडल एवं अनुप्रयोंग

इकाई –13 प्रादेशिक आगत – निर्गत विश्लेषण

इनपुट–आउटपुट सारिणी, प्रादेशिक स्तर की इनपुट आउटपुट सारणियॉ।

इकाई –14 अन्तर अंचल क्षेत्रीय व्यापार एवं अंचल क्षेत्रीय गुणक

अन्तर अंचल क्षेत्रीय व्यापार, गुणक सूत्र व चित्र निरूपण

इकाई –15 औद्योगिक काम्पलेक्स विश्लेषण

औद्योगिक काम्पलेक्स का अर्थ, कार्यकारीकरण, स्थापना के पक्ष व विपक्ष में तत्व, औद्योगिक काम्पलेक्स तथा फैलाव की नीतियॉ, अंचलक्षेत्रीय उत्पादन काम्पलेक्स के स्थानों की पहचान तथा स्थापना, ग्रोथपोल' तथा विकास केन्द्र तथा औद्योगिक काम्पलेक्स

इकाई –16 बहुस्तरीय नियोजन : इंटेरेटिव प्रक्रम का उपयोग लांगे के माडल का परिचय

नियोजन, लांगे का मॉडल।

इकाई –17 गुरूत्वाकर्षण मॉडल तथा अन्तर अंचल क्षेत्रीय प्रवाह का निर्धारण

ग्रेविटी मॉडल, अन्तर अंचलक्षेत्रीय वस्तु बहाव, अन्तर अंचल क्षेत्रीय सेवाओं के प्रवाह।

चतुर्थ खण्ड भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना

इकाई –18 क्षेत्रीय विकास के सूचक – आंकड़ों के स्रोत एवं बाधाएं

1. क्षेत्रीय विकास के सूचक
2. विकास के सूचकों के बनाने की क्रिया विधि

इकाई –19 भारत के प्रमुख प्राकृतिक संसाधन एवं उनका प्रादेशिक वितरण

1. भारत के प्राकृतिक संसाधन : प्रादेशिक विश्लेषण
2. मिट्टी
3. वन संसाधन
4. खनिज
5. जल व शक्ति संसाधन

इकाई –20 औपनिवेशिक काल में भारतीय प्रादेशिक संरचना का विकास

1. भारत का आधुनिकीकरण एवं भारत का उपनिवेशीकरण
2. अठारहवीं शताब्दी में भारतीय अर्थव्यवस्था
3. उपनिवेशवाद के चरण
4. राजस्व प्रणाली व प्रादेशिक अर्थव्यवस्थाएं
5. कृषि का व्यावसायिकरण

इकाई –21 कृषि विकास परिवर्तनशील क्षेत्रीय संरचना

1. कृषि उत्पादन क्षमता
2. कृषि क्षेत्रफल
3. कृषि उत्पादन का प्रादेशिक स्वरूप
4. मूल्य उत्पादकता
5. नयी कृषि नीति
6. भारत में कृषि क्षेत्र
7. भारत में फसलों के ढॉचे में परिवर्तन
8. सिंचाई साधनों का विकास

इकाई –22 औद्योगिक विकास परिवर्तनशील क्षेत्रीय संरचना

1. औद्योगिक विकास एवं क्षेत्रीय संरचना
2. क्षेत्रीय विकास के लिए औद्योगीकरण
3. क्षेत्रीय औद्योगिक विकास का स्वरूप एवं संरचना

इकाई –23 सामाजिक आर्थिक आधारभूत ढांचे के विकास में क्षेत्रीय असंतुलन

1. आधार ढांचा
2. क्षेत्रीय असंतुलन
3. स्वयं के द्वारा सीखने के अभ्यास प्रश्न

इकाई –24 राज्यों के अन्तर्गत अंतःक्षेत्रीय विषमताएं, राजस्थान के विशेष संदर्भ में

1. भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में राजस्थान की स्थिति
2. राजस्थान में अन्तःक्षेत्रीय विषमता के सूचक
3. क्षेत्रीय असमनताओं के कारण और असमानताओं को कम करने के सुझाव

इकाई –25 भारत में नियोजन प्रक्रिया के क्षेत्रीय आयाम

1. क्षेत्रीय असंतुलन के सुचक
2. कृषि क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, सेवा क्षेत्र
3. आयोजन एवं क्षेत्रीय असंतुलन
4. प्रादेशिक असमानताएं कम करने के लिए किये गये उपाय
5. संतुलित विकास के उपाय

इकाई –26भारत में बहु स्तरीय नियोजन (राज्य स्तर तथा जिला स्तर नियोजन के विशेष संदर्भ में)

1. विश्व अर्थव्यवस्थाओं में पायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की नियोजन व्यवस्थायें अथवा प्रणालियॉं
2. पिछड़े क्षेत्रों और अर्द्धविकसित अर्थव्यवस्थाओं के लिए नियोजन तकनीक
3. भारत में नियोजन की विधियॉं और संगठन

इकाई –27 नगर एवं महानगर नियोजन

1. महानगरों की मुख्य समस्याएं व नियोजन
2. समन्वित अंचल क्षेत्रीय नियोजन
3. अध्ययन व समस्याओं का सारांश

इकाई –28 ग्रामीण शहरी समन्वय के लिए नियोजन ग्रामीण शहरी प्रवास प्रवृत्तिः उपलब्ध स्थान में अधिकतम आवासीय संरचनाओं में सम्बन्ध कडियॉं

1. ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रवास की प्रवृत्ति के कारण
2. गांवों से शहरों की ओर प्रवासी प्रवृत्ति के गुण
3. गांवों से शहरों की ओर प्रवास करने की प्रवृत्ति के दोष व कमियॉं
4. ग्रामीण शहरी जनसंख्या के अन्तर्गमन के प्रभाव
5. ग्रामीण शहरी जनसंख्या के अन्तर्गमन प्रवास के कारण नई भूमि की खोज
6. ग्रामीण शहरी समन्वय के लिए नियोजन
7. स्व पाठ अभ्यास अथवा स्व–शिक्षण प्रयोग

इकाई –29 अंचल क्षेत्रीय साधन विकास की योजनाएं

1. साधन विकास के लिए योजनाएं
2. क्षेत्रीय नियोजन
3. आयोजना क्षेत्रों का विभाजन
4. नदी घाटी परियोजनाएं
5. वाटर शैड प्रबन्धन कार्यक्रम

इकाई –30 जिला स्तर का विकेन्द्रित नियोजन

1. जिला नियोजन तथा पंचायत राज
2. जिला नियोजन व परियोजना नियोजन नगर नियोजन

इकाई –31 भारत में क्षेत्रीय विकास योजनाएं

1. सूखा आशंकित क्षेत्र कार्यक्रम, मरूस्थल विकास–कार्यक्रम
2. पर्वतीय क्षेत्र विकास योजनाएं जनजाति क्षेत्रीय विकास योजनाएं

MAEC - 10

प्रबन्धकीय अर्थशास्त्र

खण्ड –1	**परिचय**
इकाई–1	प्रबन्धकीय अर्थशास्त्र की प्रकृति एवं क्षेत्र
इकाई–2	मांग की प्रकृति एवं उसका नियम
इकाई–3	मांग का विश्लेषण
इकाई–4	मांग की लोच
इकाई–5	तटस्थता वक्र विश्लेषण
इकाई–6	मांग पूर्वाभास
इकाई–7	फर्म का सिद्धान्त – लाभ एवं विक्रय अधिकतमकरण
खण्ड –2	**उत्पादन फलन**
इकाई–1	उत्पादन फ
इकाई–2	मांग की प्रकृति एवं उसका नियम
इकाई–3	मांग का विश्लेषण
इकाई–4	मांग की लोच
इकाई–5	तटस्थता वक्र विश्लेषण
इकाई–6	मांग पूर्वाभास
इकाई–7	फर्म का सिद्धान्त – लाभ एवं विक्रय अधिकतमकरण